Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

10. मलयालम साहित्य की स्वच्छंदतावादी परंपरा और बालमणि अम्मा

डॉ. मनीष कुमार चौधरी
एसिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
दौलत राम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

भारतीय साहित्य भारतीय भाषाओं का साहित्य है। भारतीय भाषाओं की विविधता और अनेकता की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति भारतीय साहित्य की चेतना द्वारा ही संभव है। वह चेतना जो अलग-अलग भाषाओं में अभिव्यक्ति पाती हुई भी अपनी मूल प्रकृति में भारतीय है। जब हम भारतीय साहित्य की बात करते हैं तो अनेक भाषाओं की भी बात करते हैं। भाषा का साहित्य बहुत प्राचीन रहा है। हिन्दी के समानांतर ही भारतीय साहित्य में सभी भाषाओं का एक अपना फलक है। अनेक फलक के होते हुए भी इनमें अनेकता में एकता है। बालमणि अम्मा ने निस्संदेह उन सबका एक परंपरा और उपलब्धि के रूप में उपयोग किया है, उन्हें अपनी काव्य-यात्रा के लिए पाथेय की तरह संचित किया और उनसे ऊर्जा प्राप्त की। बालमणि अम्मा की इन्हीं उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए मलयालम कवि-आलोचक के. सच्चिदानंदन ने मलयालम के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी देशी और जातीय चेतना को एक मानदंड की तरह बतलाते हुए लिखा है कि "बालमणि अम्मा जैसी वरिष्ठ लेखिकाओं के साथ सभी भारतीय भाषाओं में बहुत सारी जुझारू लेखिकाएँ आई हैं।

मुख्य शब्द- लेखिका, मलयालम साहित्य, स्वच्छंदतावादी, परंपरा, बालमणि अम्मा

प्रस्तावना

अनेकता में एकता जैसे भारतीय संस्कृति का परिचायक है, वैसे ही भारतीय साहित्य का भी परिचायक है। विविधताओं के होते हुए भी एक ऐसी धारा समूचे भारतीय साहित्य में बही है जिसे हर कोई आसानी से समझ व ग्रहण कर सकता है। इस रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय साहित्य समन्वित भारतीय चेतना का साहित्य है।

इस तथ्य को यदि हम डॉ. नगेन्द्र की 'भारतीय साहित्य' की अवधारणा से समझना चाहें तो और स्पष्ट होगा—"भारतीय साहित्य एक इकाई है, उसका समेकित अस्तित्व है जो भारतीय जीवन की अनेकता में अंतर्व्याप्त एकता को अभिव्यक्त करता है। यह लक्षण प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय भाषओं के साहित्यों के वैशिष्ट्य का निषेध नहीं करता—वरन् उसके महत्त्व को पूर्णतः स्वीकार करता हुआ, उनकी विविध प्रवृत्तियों में निहित सामान्य तत्त्वों के आधार पर समेकित भारतीय साहित्य की प्रकल्पना करता है। दूसरे शब्दों में, भारतीय मनीषा की अभिव्यक्ति का नाम

'भारतीय साहित्य' है; और भारतीय मनीषा का अर्थ है भारत के प्रबुद्ध मानस की सामूहिक चेतना—कलेक्टिव कान्शसनैस—सहस्राब्दियों से संचित अनुभूतियों और विचारों के नवनीत से जिसका निर्माण हुआ है। यह भारतीय मनीषा ही भारतीय संस्कृति, भारत की राष्ट्रीयता और भारतीय साहित्य का प्राण-तत्त्व है।"[1] डॉ. नगेन्द्र अपनी परिभाषा में 'अनेकता' के साथ 'समेकित' शब्द का, 'प्राचीन' के साथ 'आधुनिक' शब्द का और 'भारतीय मनीषा' के साथ 'सामूहिक चेतना' शब्द का प्रयोग करते हैं और अन्ततः 'भारतीय मनीषा' को ही संस्कृति, राष्ट्रीयता और साहित्य का प्राण-तत्त्व मानते हैं।

इसीलिए किसी भी भारतीय भाषा के अंतर्गत जब हम किसी विवेच्य रचना या रचनाकार पर प्रकाश डालते हैं तो उसमें भारतीय भाषा या साहित्यों की सार्वभौम चेतना को ही समझने-समझाने का प्रयास करते हैं। जैसे भारतीय भाषाओं में यदि हम स्वच्छन्दातावादी चेतना की बात करेंगे तो हमें समूचे भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्वच्छंदतावादी चेतना और भारतीयता की 'कॉमन' चेतना को समांनांतर रूप से लेकर चलना होगा। उसी तरह यदि हम राष्ट्रीय चेतना का विवेचन करेंगे तो उसके अंतर्गत देशप्रेम, देशभक्ति, नवजागरण, स्वाधीनता आन्दोलन आदि प्रवृत्तियों-परिस्थितियों को अलग-अलग न देखकर इन सबको समेकित भारतीय साहित्य की भारतीयता के अंतर्गत देखना ठीक होगा।

विवेचन

भारतीय साहित्य के अंतर्गत मलयालम साहित्य का अपना एक समृद्ध इतिहास है। केरल की साहित्य धारा को हम मुख्यतः दो शाखाओं में विभक्त पाते हैं—एक तो संस्कृत से प्रभावित और दूसरी शुद्ध द्राविड़ी शैली। पहली शैली में संस्कृत का प्रभाव खूब देखा जा सकता है, दूसरी में ठेठ द्राविड़ी भाषा का रूप। पहली शाखा को, जिसमें विभक्ति से अंत होने वाले संस्कृत शब्द और केरल-भाषा शब्द मिलाकर प्रयुक्त होते थे, विद्वानों ने 'मणिप्रवाल' की संज्ञा दी। इस साहित्य में उतनी नैसर्गिक सुंदरता रहती है, जितनी मणि और प्रवाल के सम्मिलन में। संस्कृत और केरल भाषा के शब्दों का सम्मिलन इतना सुंदर हुआ है, जिससे यह नाम पड़ गया।

दूसरी शाखा को 'पाट्टु' (गीत) कहते हैं। इसमें ठेठ द्राविड़ भाषा के ही शब्द मिलते हैं। यदि संस्कृत शब्दों का प्रयोग इधर-उधर हुआ है, तो उन्हें द्राविड़ी बनाकर प्रयुक्त किया गया है। इसके भी दो रूप हैं। एक तो वे ग्रामीण गीत हैं, जो शादी आदि अवसरों में गाए जाते थे और दूसरा वीराराधना के गीत। पी. वी. कृष्णन नायर का मानना है कि "मलयाला साहित्य की वीरगाथा और हिन्दी साहित्य की वीरगाथा में एक बहुत बड़ा फ़र्क है। हिन्दी में वीरगाथा के कवि किसी राजा के आश्रय में रहते थे और आश्रयदाता की प्रशंसा में ही गीत गाते थे। मलयालम में ऐसा नहीं हुआ है। मलयालम में पहले पहल वीरगाथा-गीत ग्रामीण गीतों के रूप में ही प्रयुक्त हुआ है।"[2]

केरल की कविता, कथा, नाटक आदि सभी विधाओं में इसकी अपनी समृद्ध परंपरा रही है। केरल साहित्य का आधुनिक काल, खास कर स्वच्छंदतावादी युग मलयालम की प्राचीन और नवीन उपलब्धियों का एक उत्कर्ष रूप है।

---

[1] डॉ. नगेन्द्र (सं.)— भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास; हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय; प्रथम संस्करण - 1989, पृ. 9-10

[2] चतुर्दश भाषा-निबंधावली; बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना द्वारा संपादित-संयोजित; द्वितीय संस्करण - 1996, पृ. 48

Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

"मलयालम की प्राचीन मणिप्रवाल शैली, गान-साहित्य, भक्ति-दर्शन की भावप्रवण गीतधारा का मधुर प्रवाह काल-यात्रा के साथ बहकर आधुनिक मलयालम काव्य में स्वच्छंदतावादी रूप धारण कर लेता है।"[3] लोककवि नंपियार का तेजस्वी भाव-चिन्तन भी इसी परंपरा में निखर कर आया है। नंपियार ने पुराणों की कथाओं को कथा का आधार बनाया और इस प्रकार उन्होंने मलयालम को संस्कृत साहित्य परंपरा की जमीन से जोड़ा। उनके बाद वी. सी. बालकृष्ण पणिक्कर जैसे कवि उभर कर आए। पणिक्कर ने रोमांटिक भावधारा का मार्गदर्शन किया। तत्पश्चात मलयालम की रोमांटिक कविता को कुमार आशान, वल्लतोल और उल्लूर की त्रयी ने उत्कर्ष पर ले जाने का काम किया। ये कवि अंग्रेजी की स्वच्छंदतावादी काव्य-परंपरा और रवींद्रनाथ की काव्य-उपलब्धियों से प्रेरित-प्रभावित थे।

कुंजिकुट्टन तंपुरान का महाभारत अनुवाद, नटुक्तहुमहन की महात्मा गाँधी विषयक कविता, बालकृष्ण पणिक्कर का 'एक विलपम' जैसे वैविध्यपूर्ण काव्य बीसवीं सदी के प्रथम दशक में लिखे गए। मलयालम कविता में आधुनिकता का जन्म ए. आर. राजराजवर्मा के 'मलयविलासम' और कुमारान आशान की 'नलिनी' से हुआ। मलयालम की एक शताब्दी की काव्य-परंपरा महाकाव्य से मुक्तक तक रूप-वैविध्य के साथ अलग-अलग भावों को अभिव्यक्त करती आई है। कवयित्रियों की भी शिरकत बीसवीं सदी से आरम्भ होती है। तोट्टक्काट माधवी अम्मा से शुरू होकर बालमणि अम्मा जैसी वात्सल्य रस की कवयित्री से होकर सुगतकुमारी जैसी आधुनिक कवयित्री, विजयलक्ष्मी, सावित्री राजीवन, वी. एम. गिरिजा और रोस मेरी जैसी कवयित्रियों की एक सुदीर्घ परंपरा है।

नालापत बालमणि अम्मा (19 जुलाई 2009 - 29 सितंबर 2004) आधुनिक मलयालम कविता की काल्पनिक या रोमांटिक धारा की तृतीय चरण की एक प्रमुख कवयित्री हैं। वे हिन्दी की प्रसिद्ध छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा की समकालीन हैं। उनकी रचनाएँ एक ऐसे अनुभव-संसार का साक्षात्कार कराती हैं जो उनसे पहले मलयालम साहित्य में नहीं देखा गया। आधुनिक मलयालम की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें "मलयालम साहित्य की दादी" (मुथास्सी) की संज्ञा दी गई है।[4] रोमांटिक धारा के तृतीय चरण में बौद्धिकता और तरलता का, परंपरा और नवीनता का तथा वैचारिकता और सामाजिकता का समन्वय देखने को मिलता है। बालमणि अम्मा ने जीवन और जगत के विविध पहलुओं को अपनी कविता का विषय बनाया है। उनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए आलोचकों का मानना है कि उनकी कविताओं में मीरा-सा समर्पण भाव, महादेवी-सी आध्यात्मिकता, सूर-सा वात्सल्य और तुलसी-सी भक्ति भावना है। इसी तरह उनमें कबीर, जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत कि विशेषताओं को भी ढूँढा गया है। कुल मिलकार आधुनिक मलयालम के काव्य क्षितिज पर बालमणि अम्मा सामंजस्य

---

[3] डॉ. नगेन्द्र (सं.) - भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास; हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय; प्रथम संस्करण - 1989, पृ. 430-431

[4] मलयालम भाषा में 'अम्मा' का अभिप्राय माँ से है, और 'मुथास्सी' का अर्थ दादी से है। मलयाला मनोरमा ईयर बुक - 2014, पृ. 204

Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

का एक व्यापक लक्ष्य लेकर चलने वाली ऐसी रचनाकार के रूप में उभरती हैं, जिनमें भरतीय साहित्य की समेकित या सार्वभौम चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है।

बालमणि अम्मा अपनी एक कविता 'माँ भी कुछ नहीं जानती' में लिखती हैं—

"बतलाओ माँ, मुझे बतलाओ,
कहाँ से, आ पहुँची यह छोटी-सी बच्ची?"
अपनी अनुजाता को परसते-सहलाते हुए
मेरा पुत्र पूछ रहा मुझसे:
यह पुराना सवाल, जिसे हज़ारों लोगों ने
पहले भी बार-बार पूछा है। [5]

अम्मा बिलकुल सरल-सहज भाषा में वही सनातन सवाल पूछ रही हैं जो पहले भी बार-बार पूछा गया है। लेकिन इस पूछने में एक नवीनता है। एक पीढ़ी अपनी पुराणी पीढ़ी से पूछ रही है, क्योंकि उसे अपनी अगली पीढ़ी को उत्तर देना है। यहाँ मुख्य है, उसी चिर-परिचित सवाल के माध्यम से दो या तीन पीढ़ियों का परस्पर संवाद या संबंध। पीढ़ी की यह चेतना अम्मा की कविताओं की मुख्य विशेषता है। एक और कविता में पीढ़ियों का संवाद उभर कर आया है, इस बार माँ और पुत्री का संवाद है—

दूर, बहुत दूर अस्पताल में
स्वच्छ श्वेत शय्या पर पड़ी तू बेटी,
अपने विचारों के गहरे धागों से
आधी रात को बुनती है क्या दिन के उजाले में?
x x x
यहाँ ओस से भीगे आँगन में बैठी
तेरी कविताएँ पढ़ती हूँ तो शंका होती है।
किसे दर्द हुआ? मुझसे अंकुरित तेरे तन को?
या जीवन खिलाने वाले तेरे मन को? [6]

एक दूसरी कविता में वे लिखती हैं—

मेरी गोदी में बैठी, ओ लाडली!
जब तू अपने चेहरे को मेरे हृदय पर टिकाती है, तो

---

[5] बालमणि अम्मा—छप्पन कविताएँ, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 1994, पृ. 74

[6] बालमणि अम्मा—नैवेद्य (निवेद्यम्); वाणी प्रकाशन, संस्करण 1996, पृ. 181

Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

बिजली की रोशनी-सी मुझमें उड़ने लगती है,
भूली-बिसरी यादों की पुलक। [7]

इस कविता का शीर्षक है 'दादी माँ'। इन दोनों कवितांशों में हम देखते हैं कि अम्मा का स्त्री-स्वर केवल 'स्व' का स्वर नहीं है, बल्कि स्त्री-पुरुष के बीच के मानवीय संबंधों को या स्त्री-स्त्री के मानवीय संबंधों को मुखरता से व्यक्त करने वाला स्वर है। दूसरी बात कि वे एकसाथ तीन पीढ़ियों से संवाद करती हैं या तीन पीढ़ियों को एक रैखिक स्थिति में लाकर खड़ी कर देती हैं। पीढ़ियों की इस उपस्थिति में अतीत की स्मृतियाँ हैं और वर्तमान की सच्चाई है। इसके साथ-साथ इन सबके बीच एक सर्जनात्मक ऊर्जा का प्रवाह भी है। स्त्रियों के बीच केवल जैविक या पारिवारिक संबंधों की जगह एक सर्जनात्मक संबंध की ऊर्जा प्रावाहित है। तीसरी बात यह है कि बालमणि अम्मा चूँकि आधुनिकता की चेतना से युक्त कवयित्री हैं इसीलिए उनकी कविताओं में एक मानवीय आधुनिकता बोध भी दिखालाई पड़ता है।

बालमणि अम्मा की कविताओं में पौराणिक आख्यानों की पुनर्व्याख्या के बाद जो सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता परिलक्षित की गई है, वह है नारी चेतना और दलित-संवेदना। उनकी आरंभिक कविताओं में आदर्श स्त्री की भारतीय छवि देखने को मिलती है। एक आदर्श गृहिणी, विवाहिता, पत्नी और मातृ-रूप में स्त्री की विविध भूमिकाओं का अंकन उनकी कविताओं में ख़ास तौर पर ध्यान आकृष्ट करते हैं। वे परित्यक्ता स्त्री की वेदना को वाल्मीकि की सीता की तर्ज पर कविता में बड़े ही सर्जनात्मक रूप में प्रस्तुत करती हैं। वे स्त्री की चेतना को जीवन की सामान्य चेतना के रूप में एक साहित्यिक आयाम देती हैं। लेकिन यहीं से जब उनकी कविता दलित संवेदना की ओर मुड़ जाती है तो उसमें अभिव्यक्ति की सांद्रता और तीक्ष्णता आ जाती है। उनके लिए 'दु:ख' मात्र की सार्वजनिक उपस्थिति ही काव्य-विषय बन जाती है। इसीलिए दलित-स्त्री या सामान्य-स्त्री का वैसा कोई साफ-साफ विभाजन उनमें नहीं मिलता है। हालाँकि दलित संवेदना की अभिव्यक्ति भी उनके यहाँ उतनी ही प्रगाढ़ है।

इस प्रकार मात्र कुछेक कविताओं के आधार पर ही हम देखते हैं कि बालमणि अम्मा मलयालम भाषा की आधुनिक कविता में एक दृष्टिसंपन्न रचनाकार हैं। उन्होंने मलयालम साहित्य की प्रगति में अक्षुण्ण योगदान दिया है।

निष्कर्ष

साहित्यिक दृष्टि से मलयालम भाषा के समृद्ध होने का पहला कारण है कि "केरल भारत का सर्वाधिक साक्षर प्रदेश है और वहाँ साक्षरता की दर शत-प्रतिशत है। मलयालम साहित्य की प्रगति का दूसरा प्रमुख कारण है, माल्यालम का संस्कृत से प्राचीन काल से संबंध। मणिप्रवालम् ने यह स्पस्ट कर दिया है कि संस्कृत वहाँ की काव्यभाषा प्राचीन काल से थी और संस्कृत साहित्य लोकप्रिय था... केरल की साहित्यिक समृद्धि का तीसरा बड़ा कारण है उदारता और राष्ट्रीयता। केरल भाषा के प्रति दुराग्रही नहीं रहा।"[8] यहाँ मलयालम की समृद्धि हेतु जिन तीन कारणों की ओर संकेत

---

[7] बालमणि अम्मा—नैवेद्य (निवेद्यम्); वाणी प्रकाशन, संस्करण 1996, पृ. 17

[8] लक्ष्मीकांत पांडेय, प्रमिला अवस्थी—भारतीय साहित्य; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2016, पृ. 149

Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

किया गया है, बालमणि अम्मा ने निस्संदेह उन सबका एक परंपरा और उपलब्धि के रूप में उपयोग किया है, उन्हें अपनी काव्य-यात्रा के लिए पाथेय की तरह संचित किया और उनसे ऊर्जा प्राप्त की। इन लेखिकाओं के पास सही मुद्दों की देशी और जातीय चेतना कहीं अधिक गहरी हैं।"[9]

सन्दर्भ

डॉ. नगेन्द्र (सं.)— भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास; हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय; प्रथम संस्करण - 1989, पृ. 9-10

चतुर्दश भाषा-निबंधावली; बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना द्वारा संपादित-संयोजित; द्वितीय संस्करण - 1996, पृ. 48

डॉ. नगेन्द्र (सं.) - भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास; हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय; प्रथम संस्करण - 1989, पृ. 430-431

मलयालम भाषा में 'अम्मा' का अभिप्राय माँ से है, और 'मुथास्सी' का अर्थ दादी से है। मलयाला मनोरमा ईयर बुक - 2014, पृ. 204

बालमणि अम्मा—छप्पन कविताएँ, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 1994, पृ. 74

बालमणि अम्मा—नैवेद्य (निवेद्यम्); वाणी प्रकाशन, संस्करण 1996, पृ. 181

बालमणि अम्मा—नैवेद्य (निवेद्यम्); वाणी प्रकाशन, संस्करण 1996, पृ. 17

लक्ष्मीकांत पांडेय, प्रमिला अवस्थी—भारतीय साहित्य; लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2016, पृ. 149

के. सच्चिदानंदन—भारतीय साहित्य : स्थापनाएं और प्रस्तावनाएँ, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2014, पृ. 68

[9] के. सच्चिदानंदन—भारतीय साहित्य : स्थापनाएं और प्रस्तावनाएँ, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2014, पृ. 68